IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारतीय-अमेरिकी संबंधों में भारतीय प्रवासियों की गतिशीलता एवं प्रभावी योगदान

लकी यादव[1], डॉ. संजय मिश्रा[2]

[1]शोध छात्र, [2]प्रोफेसर

राजनीति विज्ञान विभाग

एम.एम.एच. कालेज, गाजियाबाद (उ.प्र.) भारत

संबंध चैधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ (उ.प्र.), भारत

अमूर्तः भारतीय-अमेरिकी संबंधों में भारतीय प्रवासी आज एक मजबूत आधार स्तम्भ की तरह काम कर रहे है। अमेरिका में इनकी अनुमानित संख्या करीब-करीब 2.7 मिलियन है जो बहुराष्ट्रीय कंपनियों के मुख्य कार्यकारी अधिकारी से लेकर कानून, प्रशासन और अर्थव्यवस्था की विभिन्न संस्थाओं में अपनी भागेदारी को बढ़ाते जा रहे है। भारतीय प्रवासी अमेरिका में रहकर वहाँ की राजनीतिक दशा एवं दिशा को तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वहन करते नजर पड़ते है। भारतीय प्रवासी आज भी अपनी सांस्कृतिक विरासत को अक्षुण्ण रखे हुए है। उनकी सफलता का श्रेय उनकी परम्परागत सोच, सांस्कृतिक मूल्य तथा शैक्षणिक योग्यता के बल पर हासिल सौम्य शक्ति को जाता है। भारतीय प्रवासी भारत के लिए न केवल प्रेषण भेजते है बल्कि अपने मूल देश के लिए रणनीतिक संपत्ति का भी काम करते है। अपनी कूटनीतिक योग्यता के बल पर 21वीं शदी के भारत के लिए विभिन्न नीतियां बनवा पा रहे है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कार्यकाल में अमेरिका में भारतीय प्रवासियों की महत्ता को और अधिक बल मिला है, उन्हें भरोसा है कि भारत उनकी प्रतिभा पलायन को प्रतिभा वापसी में बदलने की हर संभव कोशिश करेगा। प्रवासी भारतीयों ने अपनी सौम्य शक्ति को ताकत बनाकर अमेरिका में एक मजबूत 'आदर्श अल्पसंख्यक' बनकर उभरे है, जो आज के दौर में शैक्षणिक, आर्थिक और राजनीतिक ताकत के बलबूते भारत-अमेरिकी रिश्तों को बड़ी ही चालाकी से प्रभावित कर रहे है। इस तरह से भारतीय प्रवासियों की अमेरिका में गतिशीलता एवं उनके प्रभावी योगदान को इस शोध पत्र में बड़ी प्रमुखता से उभारा गया है।

कुंजी शब्द- प्रवासी, प्रेषण, रणनीतिक संपत्ति, सौम्य शक्ति

1. परिचय

अंतराष्ट्रीय राजनीति में अमेरिका न तो कभी भारत का सच्चा मित्र रहा है और न ही कभी कट्टर दुश्मन। दोनों देशों के बीच के संबंधों में सदैव उतार-चढ़ाव का दौर जारी रहा है, जो गुटनिरपेक्ष आन्दोलन से होते हुए शीत युद्ध के दौरान भी अलग-अलग रूपों में परिलक्षित होता रहा हैं। आज 21वीं शताब्दी में, भारत-अमेरिका दोनों ही देश एक समान रणनीतिक अभिसरण की ओर बढ़ रहे है। जिसमें प्रमुख योगदान भारतीय प्रवासियों तथा उनकी सौम्य शक्ति का है। इस बात की पुष्टि 1990 में जोसफ एस.नाई ने अपनी ''बांउड टू लीड: द चैलेंजिंग नेचर आफ अमेरिकन पावर'' नामक किताब में ''साफ्ट पावर'' की अवधारणा देकर किया। साफ्ट पावर एक वृहत अवधारणा है जो अंतराष्ट्रीय जगत में एक निर्णायक भूमिका अदा करती है। इसी साॅफ्ट पाॅवर का उपयोग

भारतीय प्रवासी कर रहे हैं। वे अमेरिका की जमीन पर रहते हुए भारत के लिए आर्थिक सहयोग तथा रणनीतिक संम्पत्ति तैयार कर रहे है।

संयुक्त राज्य अमेरिका में रह रहे प्रवासी भारतीयों को भारतीय अमेरिकी भी कहा जाता है। इनकी संख्या उत्तरी अमेरिका में सबसे तीव्र गति से बढ़ रही है। ये मेक्सिकन तथा चीनी लोगों के बाद सबसे अधिक प्रवासी है। वर्तमान में भारतीय समुदाय का एक बड़ा हिस्सा युवा, उच्च शिक्षा प्राप्त है जो विज्ञान, गणित, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित के क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान दे रहा है। आज भारतीय छात्र अमेरिकी विश्वविद्यालयों में दूसरे सबसे बड़े अंतर्राष्ट्रीय छात्र समुदाय के रूप में नामांकित हो चुका है। भारतीय प्रवासियों की आबादी अमेरिका के विभिन्न प्रान्तों में फैली हुई है जिसमें कैलिफोर्नियां (20%), न्यूजर्सी (11%), टेक्सास (9%), न्यूयार्क (7%) और इलिनोइस (7%) प्रमुख है। सांस्कृतिक रूप से समृद्ध और आर्थिक रूप से सफल भारतीय समुदाय वर्तमान में दुनियाँ के प्राचीन लोकतंत्र तथा सबसे बड़े लोकतंत्र के बीच कड़ी का काम कर रहा है।

2. ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

प्रवासी भारतीय मुख्यतः वे लोग होते है जो अपनी वर्तमान मातृभूमि को छोड़कर किसी अन्य गणराज्य की सीमाओं में चले जाते है। भारतीय प्रवासी समुदाय में मुख्यतः अनिवासी भारतीय (एन.आर.आई.), भारतीय मूल के व्यक्ति (पी.आई.ओ.) और भारत के विदेशी नागरिक (ओ.सी.आई.) आते है। सन् 2015 में पी.आई.ओ. और ओ.सी.आई. कार्डों को मिलाकर एक श्रेणी में सम्मलित कर दिया गया है। भारतीय प्रवासी अमेरिका में रहने वाले सबसे अधिक गतिशील समुदाय है जो अपना एक इतिहास रखता है। भारतीयों की अमेरिका में प्रथम प्रवास लहर 1800 के दशक के अन्त में दिखाई पड़ती है और उस दौरान भारतीय लोगों का मुख्य प्रयोजन शिक्षा तथा आर्थिक अवसरों को हासिल करना था। इसका प्रमुख उदाहरण भगत सिंह थिंड बने जिन्होंने 1913 में कृषि में डिग्री हासिल करने के वास्ते अमेरिका आए। इसी दौर में भीकाजी बलसारा अमेरिका की प्राकृतिक नागरिकता भी हाशिल कर लेते हैं। 20वीं सदी शुरुआत आते ही भारतीयों ने अमेरिका में अपनी गतिशीलता दिखानी शुरू कर दी और कई भारतीयों ने विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्धियां हाशिल की, आगे चलकर वे पेशेवर डाक्टर, वैज्ञानिक तथा इंजीनियर भी बने। इसी दूसरी लहर में एस.आर. रंगनाथन प्रसिद्ध लाइब्रेरियन और सूचना वैज्ञानिक बनते है। वही 1960 के दशक में भारतीय प्रवासियों की एक उल्लेखनीय वृद्धि देखी जाती है क्योंकि अमेरिकी सरकार ने आव्रजन प्रतिबंधों में ढिलाई कर दी थी। आज अमेरिका में भारतीय प्रवासियों की सबसे तेज संख्या बढ़ रही है। यह समुदाय वर्तमान समय में एक सबसे समृद्ध जातीय समूह बनकर उभरा है। नवीनतम अमेरिकी जनगणना आँकड़ा (2021) के अनुसार आज 4 मिलियन से अधिक भारतीय प्रवासी अमेरिका में निवास करते है, जो अमेरिकी आबादी का 1.3 प्रतिशत है।

3. भारतीय प्रवासियों की गतिशीलता–

भारत की साफ्ट पावर का जरिया उसके प्रवासी है, जो इसकी सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा रणनीतिक संम्पत्ति है। अमेरिका के भीतर, भारतीय प्रवासी एक उपयोगी सार्वजनिक कूटनीति का भी उपकरण है जो अपने नैतिक अनुशासन, अहस्तक्षेप, शांतिप्रियता के लिए जाने जाते है। ये मूल्य अंततः अमेरिका में भारतीयों की छवि को प्ररिलक्षित करते है तथा उसमें चार चाँद लगाते है। अमेरिका में भारतीय प्रवासी न केवल भारत की साॅफ्ट पावर का स्रोत है बल्कि भारत की साफ्ट पावर का अभिकर्ता भी। इस बात की पुष्टि के लिए भारतीय प्रवासियों की अमेरिका में गतिशीलता को जाँचा जा सकता है।

3.1 संस्कृति के क्षेत्र में गतिशीलता– भारतीय प्रवासी अपनी संस्कृति को भाषा, संगीत, सिनेमा तथा त्यौहारों के माध्यम से आज भी परिलक्षित किए हुए है। अमेरिका में बहुत सारे हिंदी रेडियो स्टेशन है जैसे कि पंजाबी रेडियो यू.एस.ए., देशी जंक्शन, सलाम नमस्ते, मशाला रेडियो, आर.बी.सी. रेडियो, रेडियो हमसफर, फन एशिया रेडियो सभी भारतीय गाने बजाते है, भारतीय संस्कृति को प्रोत्साहित करते है। भारतीय केबल चैनल भी अमेरिका में प्रसारित होते हैं, जिनमें सोनी टीवी, जी टीवी, स्टार प्लस, कलर्स और क्षेत्रीय भाषाई चैनल भी प्रसारण कर भारतीय अभिनय व संगीत को घरों में पहुंचा रहे है। कई भारतीय मूल के अभिनेता तथा अभिनेत्रियों ने अमेरिकीयों के बीच खासी प्रसिद्धि हाशिल कर ली है जिनमें प्रियंका चोपड़ा, पद्मा लक्ष्मी, फ्रीडा पिंटो, कुणाल नय्यर, मीरा नायर और मधुर जाफरी है। जिनकी बालीवुड फिल्में अमेरिकी सिनेमा घरो में प्रदर्शित की जाती है। भारतीय प्रवासी आज भी अपनी संस्कृति से जुड़े होने के नाते अधिकांश भारतीय त्यौहारों को बड़ी धूमधाम के साथ मनाते है। त्यौहार उत्सवों में भारतीय संगीत और बाॅलीवुड नृत्य बड़े ही चाव से होता है। संस्कृति फैलाव के लिए कई भाषाई संगठन जैसे– आंध्र प्रदेश अमेरिकन एसोसिएशन, बंगाल सांस्कृतिक संघ तथा महाराष्ट्र मंडल काम कर रहे हैं। वही मीडिया के क्षेत्र में

मिंडी कलिंग, काल पेन, शीतल सेठ, हसन मिन्हाज, राजा कुमारी और संेथिल राममूर्ति प्रमुख रूप से मीडिया में काम कर रहे है। ये मीडिया कर्मी वैश्विक परिदृश्य में अपनी भूमिका अदा कर रहे है।

3.2 धार्मिक क्षेत्र में गतिशीलता– भारतीय प्रवासियों की अमेरिका में बहुतायत है, जिसमें 2018 की धार्मिक संरचना के अनुसार हिदू (48%), ईसाई, (15%), मुस्लिम (8%), सिख (8%), जैन (2%) है। भारतीयों ने अपने धर्म को अमेरिका में बड़ी ही दृढ़ता के साथ संभाल के रखा है। भारतीय धार्मिक समुदायों ने कई सारे धार्मिक संगठन बना रखे है, जिसकी मदद से धार्मिक अनुष्ठानों को बड़ी धूमधाम के साथ मनाया जाता है। हिन्दू भारतीय प्रवासियों ने अमेरिका में हिंदू अमेरिकन फाउंडेशन बना रखा है। यह संगठन धार्मिक कार्यों में दान देते है और धार्मिक कार्यों को सुचारु रूप से गति प्रदान करते रहते है। अमेरिका में भारतीय हिन्दू अपनी सहिष्णुता के लिए जाने जाते है। वे कभी भी किसी अन्य धार्मिक संगठनों के प्रति कटुता नहीं रखते है आज अमेरिका में बहुत सारे हिंदू मन्दिर बने हुए है, जिनमें श्री स्वामीनारायण अक्षरधाम मंदिर जो न्यू जर्सी में स्थित है, वह बहुत ही प्रसिद्ध है। वहीं खालसा फूड पेंट्री और खालसा पीस काप्रस सिख संगठन भी धार्मिक प्रयोजनों में दान देते है तथा गरीब भारतीयों की आर्थिक मदद दान देकर करते है। 'द सिखसेस' संगठन भोजन व कपड़ों को भारतीयों में वितरित करते नजर आते है। जब कभी भी भारतीय प्रवासी प्राकृतिक आपदा के शिकार होते हैं तो सभी के सभी धार्मिक संगठन सार्वजनिक सेवा के कार्यों में लग जाते है। यही कारण रहा है कि सभी भारतीय धर्मों के त्यौहारों को अमेरिका में बड़े ही हर्ष के साथ मनाया जाता है। अमेरिका में दीपावली, ईद, रमजान के अवसरों पर स्कूलों में सार्वजनिक अवकाश रखी जाती है।

3.3 शिक्षा के क्षेत्र में गतिशिलता– आज भारतीय प्रवासी शिक्षा के क्षेत्र में बहुत ही सफल नजर आते है। वे दुनियां के सबसे पुराने लोकतंत्र और दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के बीच एक कड़ी के रूप में काम कर रहे है। भारतीय प्रवासियों में 79% लोग अंग्रेजी भाषा में कुशल है और लगभग 68% लोगों के पास स्नातक की डिग्री है। एक आँकड़े के अनुसार भारतीय प्रवासी 25 वर्ष की आयु में 79% स्नात्तक की डिग्री हाशिल करते है, इनकी तुलना में अमेरिकी महज 31% ही स्नात्तक की डिग्री हाशिल कर पाते है। वहीं 25 वर्ष की आयु पार लोगों में भारतीय प्रवासी जहाँ 44% परा स्नात्तक और पीएच.डी. करते है तो वही अमेरिकी लोगों का यह आँकड़ा महज 11% तक ही पहुंच पाता है। भारतीय प्रवासियों ने विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित जैसे क्षेत्रों में उपलब्धियां हासिल की है तो वही 38% डाक्टर भारतीय है। अमेरिका में शोध, नवाचार और शिक्षा के क्षेत्र में भारतीयों का डंका बजता है। एक आँकड़े के अनुसार 1975 से 2019 के बीच भारतीय मूल के नवाचारियों के पास मौजूदा पेटेंट की हिस्सेदारी 2% से बढकर 10% तक पहुंच चुकी है। भारतीय मूल के लगभग 22,000 विभागीय सदस्य अमेरिका के विभिन्न कालेजों तथा विश्वविद्यालयों में पढ़ा रहे है, जो सभी विभागी सदस्यों का लगभग 2.6% है।

3.4 घरेलू आय के क्षेत्र में गतिशीलता– भारतीय–अमेरिकी काँग्रेसी राजा कृष्णमूर्ति के अनुसार, आज भारतीय–अमेरिकीयों के पास किसी अन्य समुदाय की अपेक्षा प्रतिव्यक्ति आय सबसे ज्यादा है। सन् 2022 की अमेरिकी जनगणना के आँकड़ों के हिसाब से आज औसत भारतीय अमेरिकी की घरेलू आय 151485 डालर हो चुकी है। भारतीय अमेरिकीयों स्टार्टअप क्षेत्र में मजबूत पकड़ बना चुके है, आज वे 648 अमेरिकी यूनीकार्न में से 72 के सह–संस्थापक है। बहुत सारी कम्पनियाँ आज रोजगार उत्पन्न कर रही है, जिनमें कैम्ब्रिज मोबाइल टेलीमेटिक्स और सोल्यूजेन प्रमुख है। इनसे 55000 लोग रोजगार प्राप्त कर रहे है। इन कम्पनियों की कीमत 195 बिलयन अमेरिकी डालर की है। भारतीय अमेरिकीयों के पास अमेरिका के 60% होटलों का स्वामित्व है। भारतीय प्रवासी आबादी में तो केवल 1.5% है, किन्तु वे आयकर में 5-6% की हिस्सेदारी देते है। जिससे अप्रत्यक्ष रूप से 11 से 12 मिलियन नौकरियों का सृजन करवाते है। भारतीय प्रवासियों का अमेरिका के अन्दर बहुत ही ज्यादा आर्थिक प्रभाव है। विश्व बैंक की रिपोर्ट (2011) के अनुसार भारत को अमेरिका से लगभग 18 बिलियन डालर धन प्रेषण प्राप्त होता है। भारतीय प्रवासी न केवल अमेरिका को आर्थिक मजबूती प्रदान कर रहे है बल्कि भारत के साथ भी वे कन्धें से कन्धा मिलाकर चल रहे है।

3.5 राजनीति के क्षेत्र में गतिशीलता– नवम्बर 2016 में हुए चुनावों में भारतीय अमेरिकी उम्मीदवारों ने जीत हासिल की, जिसमें रो खन्ना, राजा कृष्णमूर्ति, प्रमिला जयपाल और कमला हैरिस प्रमुख रही। वही 2021 के काँग्रेसी चुनावों में भी भारतीय मूल के प्रत्यासियों ने अच्छा प्रर्दशन किया, जिसमें सभी भारतीय मूल के उम्मीदवारों ने अपनी सीटे बरकरार रखी। जिन्हें डेमोक्रेटिक पाट्री ने टिकट दिया, उनमें एक चर्चित नाम कमला हैरिस का है, जो वर्तमान में उपराष्ट्रपति के पद को सुशोभित कर रही है। यह लगभगतः स्पष्ट है कि वे अगले चुनाव में राष्ट्रपति पद की प्रबल उम्मीदवार हो। वे भारतीय प्रवासियों के वोट हासिल करने के लिए उन्हें रिझाने की पूर्ण कोशिश करेगी। यही बात भारतीय प्रवासियों की साॅफ्ट पाॅवर का पुख्ता सबूत है। इसीलिए 2016 के अमेरिकी राष्ट्रपति ने चुनाव जीतने के बाद भारतीय प्रवासियों को धन्यवाद ज्ञापित किया तथा अपने मंत्रिमण्डल में लगभग 9 भारतीय अमेरिकीयों को

सार्वजनिक पदों पर नियुक्त किया। जिनमें श्रीमती निक्की हेली, कृष्णा आर. उर्स, मनीषा सिंह, नील चटर्जी, राजशाह, विशाल अमीन, नेओमी राव, अजीत बी. पाई और सीमा वर्मा प्रमुख नाम है। वर्तमान वाइडेन सरकार ने भी 20 भारतीय व्यक्तियों को नियुक्त किया गया है, जिनमें 13 महिलाएं हैं जिनमें कमला हैरिस (उपराष्ट्रपति), नीरा टंडन, वनिता गुप्ता, उज़ारा ज़ेया, माला अडिगा, गरिमा वर्मा, आयशा शाह, सुमोना गुहा, सोनिया अग्रवाल, नेहा गुप्ता, रीमा शाह जैसी प्रमुख प्रशासक हस्तियाँ है, जो अपने कार्यभार को बड़ी बखूबी से संभाल रही है और भारत प्रवासियों के दिलों पर राज कर रही है। वहीं कुल मिलाकर 80 से ज्यादा भारतवंशी अमेरिकी प्रशासन को बड़ी बखूबी से चला रहे है। ये भारतीय प्रवासियों की राजनीतिक माँगों को सरकार के पास पहुंचाते है। भारतीय मूल के लोग आज अपने दृढ़ राजनीतिक शक्ति की बदौलत ही आसमान की बुलंदियों को छू रहे है।

4. भारतीय प्रवासियों का योगदान

अपनी सौम्य शक्ति और गतिशीलता के चलते आज भारतीय अमेरिकीयों ने अमेरिका के बहुत से क्षेत्रों में अपनी हिस्सेदारी बढ़ा ली है। यू.एस.ए. बीजा टाक के अनुसार माइक्रोसाफ्ट में 34% कर्मी भारतीय है। यही सिलसिला वैज्ञानिक (12%), जेरोक्स (13), नासा (36%), आई.बी.एम. (28%) और डाक्टर्स (38%) के क्षेत्रों में भारतीय प्रवासियों की हिस्सेदारी का है। अमेरिका में भारतीय प्रवासी आज दोनों देशों के बीच के राजनीतिक सम्बन्धों को मजबूती प्रदान कर रहे है। भारत दो कारणों के आधार पर भारतीय अमेरिकी समुदाय को अधिक महत्व दे रहा है। पहला, भारतीय अमेरिकी लोग अमेरिकी चुनाव में राजनीतिक प्रतिनिधित्व हाशिल कर रहे है। दूसरा, भारतीय अमेरिकी लोग बहुत शिक्षित, अमीर होने के नाते भारत की समस्याओं के प्रति जागरूक रहकर आर्थिक निवेश करवाने में सशक्त भूमिका निभाते है। अमेरिका में भारत की साफ्ट पावर का लक्ष्य सामरिक प्रकृति का है। आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक पैतरेबाजी के कारण भारतीय अमेरिकी लोग आज भारत के हित में काम करवा पा रहे है। भारतीय प्रवासियों के चलते ही '123 सहमति' की पुष्टि तथा हस्ताक्षर हुए। भारत अप्रसार संधि के सभी प्रावधानों का लाभ उठाने में सक्षम बन पाया।

5. निष्कर्ष

अमेरिका में भारतीय प्रवासियों का विकास अभूतपूर्व ठंग से हुआ है। 21वीं शताब्दी के तृतीय दशक आते-आते भारतीय प्रवासी अमेरिकी समाज का एक आर्थिक और सामाजिक रूप से सुस्थापित हिस्सा बन चुका है। भारतीय प्रवासी अमेरिका में काफी संगठित है और बहुत सारे लोग भारत को प्रेषण भेजते रहते है। भारत की सरकार प्रवासी भारतीयों को अपनी सबसे बड़ी रणनीतिक पूंजी मानते हुए इनकी सुरक्षा को सर्वोच्च पायदान पर रखती है और इनके लिए अनेक नीतियां भी तैयार की है, जैसे- भारत को जाने कार्यक्रम, भारत का अध्ययन कार्यक्रम, प्रवासी बच्चों के लिए छात्रवृत्ति कार्यक्रम, प्रवासी भारतीय बीमा योजना और महात्मा गांधी प्रवासी सुरक्षा योजना आदि की मदद से प्रवासियों को भारत के साथ जोड़े रखना चाहती है।

वर्तमान सरकार भारतीय प्रवासियों को बहुत अधिक महत्व दे रही है क्योंकि भारतीय प्रवासी न केवल भारत के विकास के लिए जरूरी है बल्कि वैश्विक उभार में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है। यही कारण है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 2019 में टेक्सास के ह्यूस्टन में भारतीय लोगों संबोधित कर उन्हें अपनेपन का अहसास कराते है। भारतीय प्रवासी आज अमेरिका में सबसे अधिक धनी, शिक्षित और कानून का पालन करने वाला एक 'आदर्श अल्पसंख्यक' समुदाय है। अमेरिका में भारतीय प्रवासियों की कड़ी मेहनत, दृढ़ संकल्प और अपने मूल देश के साथ आत्मीय बंधन में बंधे रहने की गाथा बड़ी मार्मिक है। कभी इन्हें सेपरा माना जाता था, आज वो अमेरिका में बढ़ती भारतीय साॅफ्ट पावर के प्रतीक है।

संदर्भ-

1. यूनाइटेड नेसन्स वर्सस भगत सिंह थिंड, 1923

2. नाई, जोसफ एस. (1990) वाउंड टू लीड: दी चेजिंग नेचर आॅफ अमेरिकन पावर, न्यूयार्क, बेसिक बुक्स

3. नाई, जोसफ एस. (2005), साफ्ट पावर: दी मीन्स टू सक्सेस इन वर्ल्ड पाॅलिटिक्स, न्यूयार्क, पब्लिक अफेयर्स

4. दुबे, अजय (2003) इण्डियन डायस्पोरा: दी ग्लोबल आइडेन्टिटी, न्यू

देलही, कलिंग पब्लिकेशन

5. कपूर, देबेश (2010) डायस्पोरा, डेवेलपमेंट एण्ड डेमोक्रेसी, दी डोमेस्टिक इम्पैक्ट आॅफ इण्टरनेशनल माइग्रेसन फ्राम इण्डिया, न्यू देहली, आक्सफोर्ड प्रेस

6. साहू, ए.के. (2012) इण्डियन डायस्पोरा एण्ड ट्रान्सनेशनलिज्म, जयपुर, रावत पब्लिकेशन्स

7. वर्ल्ड फोकस प्रवासी भारतीय विशेषांक, 2015

8. सहाय, अंजली, (2009), इण्डियन डायस्पोरा इन दी यूनाइटेड स्टेट्स, ब्रेन डेªन ओर गेन?, न्यूयार्क, रावमन एण्ड लिटिलफील्ड पब्लिसर

9. वरदाराजन, लथा (2010), दी डोमेस्टिक अब्रोड डायस्पोरास इन इन्टरनेशनल रेलेसन्स, न्यूयार्क, आक्सफोर्ड यूनिवरसिटी प्रेस

10. चक्रवर्ती, संजय, कपूर, देवेश, सिंह, निर्विकार (2017), दी अदर वन पर्सेंट इंडियन इन अमेरिका, आक्सफोर्ड यूनिवसिटी प्रेस आईएसवीएन 9780190648749

11. अचीवमेंट्स आॅफ इण्डियन इन दी यूनाईटेड स्टेट्स, यू.एस.ए. बीज टाॅक, 2013

12. दी डिप्लोमेट, वाट्स नेक्ट् फाॅर इण्डिया- यू.एस. रेलेसन्स?, जुलाई, 2018

13. वाई दी इण्डियन डायस्पोरा इन दी यू.एस. इम्पोरटेण्ट, दी इकोनोमिक्स टाइम्स, 2018